विराटनगर-नेपाल। 'विश्व परिवर्तन के लिए परमात्म ज्ञान-2016' विषयक कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश कुमार प्रसाद पोखरेलजी, विराटनगर रानी कस्टम के चीफ कृष्ण प्र. बस्नेत, माउण्ट आबू से ज्ञानामृत पत्रिका की संयुक्त संपादिका ब्र.कु. उर्मिला, ब्र.कु. गीता तथा अन्य।

रोहतक-हरियाणा। आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान बलराम शर्मा,एडमिनिस्ट्रेटिव मैनेजर,दैनिक जागरण को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. सावित्री एवं ब्र.कु. सुष्मा रानी।

खटीमा-उत्तराखण्ड। नवदुर्गा चैतन्य झाँकी के अवलोक के पश्चात् माँ दुर्गा को चुन्नी ओढ़ाते हुए खटीमा फाइवर्स लि. के सी.एम.डी. डॉ. आर.सी. रस्तोगी एवं सिटी कॉन्वेन्ट स्कूल के एम.डी. मोहन चन्द उपाध्याय। साथ हैं ब्र.कु. अम्बिका।

शामली-उ.प्र.। किसान सशक्तिकरण सम्मेलन में दीप प्रज्वलित करते हुए डिप्युटी डायरेक्टर ऑफ एग्रीकल्चर, कृषि विभाग के इन्जीनियर, ब्र.कु. सरला, ब्र.कु. भारत भूषण, ब्र.कु. राज बहन व अन्य।

बल्लभगढ़ सेक्टर-55(हरियाणा)। चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करने के पश्चात् समूह चित्र में उपस्थित हैं राजेश चेची,असिस्टेन्ट कमिश्नर ऑफ पुलिस,एफ.बी.डी., एस.के. शर्मा,वाइस प्रेसीडेन्ट,रोड सेफ्टि ऑर्गनाइज़ेशन,एफ.बी.डी., ब्र.कु. सुशीला एवं ब्र.कु. सरोज।

जयपुर-राजापार्क। मुस्लिम समाज सेवा के मुख्य सचिव संदीप जी को चैतन्य देवियों की झाँकी व आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का अवलोकन कराने के पश्चात् समूह चित्र में उनके साथ उपस्थित हैं ब्र.कु. पूनम, ब्र.कु. शशि तथा अन्य।

भगवान ने बताये संसार से प्रयाण के दो मार्ग

- गतांक से आगे...

जब ध्यान में बैठना है, तो ध्यान उसी का ही लगता है – जिसके हृदय में अनन्य भाव हो ईश्वर के प्रति। देखो कैसे भगवान भी उसको रिसपांड करते हैं और फिर भगवान समझाते हैं। सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग, कलियुग इन चारो युगों का एक कल्प होता है। सतयुग, त्रेतायुग, ये ब्रह्मा का दिन माना जाता है तथा द्वापर और कलियुग, ये ब्रह्मा की रात्रि मानी जाती है।

ब्रह्मा के दिन के आरंभ में आत्मायें अव्यक्त से व्यक्त प्रकृति का आधार लेती हैं। इस संसार में आती हैं, और जब ब्रह्मा की रात्रि का अंत होता है अर्थात् द्वापर, कलियुग का अंत होता है, तो सभी आत्मायें व्यक्त से अव्यक्त अवस्था में चली जाती हैं। फिर घर जाना पड़ता है। ये दुनिया का क्रम है और इस तरह से ये संसार का चक्र चलता है। परंतु इसके अतिरिक्त एक अव्यक्त, शाश्वत प्रकृति है जो सभी पंच महाभूतों के नाश होने पर भी नाश नहीं होती है। वो दिव्य लोक नाश नहीं होता जो व्यक्त, अव्यक्त अवस्था से श्रेष्ठ है। अविनाशी और सबसे परे है। वही मेरा परमधाम है। जहाँ पर मैं विराजमान होता हूँ। यानी अभी तक भी अर्जुन श्रीकृष्ण के रूप में ही भगवान को देख रहा था। तब भगवान पुन: ये स्पष्ट करते हैं कि हे अर्जुन! मैं उसी अविनाशी सबसे परे ते परे लोक में, जिसको परमधाम कहा जाता है वहां मैं विराजमान होता हूँ। मैं इस संसार में नहीं होता हूँ। मैं वहाँ रहता हूँ। लेकिन अधर्म के नाश के समय पर मैं ऐसे युगे-युगे अवतरित होता हूँ, उस अव्यक्त धाम से इस व्यक्त धाम में।

इस संसार से जाने के दो मार्ग को बताते हैं, ताकि हर इंसान भी अपने लिए स्पष्ट कर ले कि मुझे कौन से मार्ग से जाना है। तो इस अध्याय के अंत में भगवान कहते हैं कि संसार से प्रयाण करने के दो मार्ग हैं - एक प्रकाश का मार्ग है और दूसरा अंधकार का मार्ग है। जो मनुष्य प्रकाश के मार्ग से जाता है, वह ज्ञानयुक्त, कर्म मार्ग अर्थात् जिसमें यज्ञ सेवा की अग्नि जलती हो। यानी जिसकी बुद्धि ज्ञानयुक्त बुद्धि हो, कर्मयोगी हो, जो कर्म करते हुए भी नित्य परमात्मा की याद में हो। जिसमें यज्ञ सेवा अर्थात् आत्मा के शुद्धिकरण की सेवा में जो नित्य अग्नि जलाए हुए हो, बुद्धि की प्रभा सूर्य के समान चमकती हो, हृदय आकाश में आसक्ति के बादल न हो कहीं भी और भावनाओं का पूर्ण उजाला हो। वो प्रकाश के मार्ग से जाते हैं। ऐसे दिन के शुभ लक्षण में शुक्ल पक्ष में या सूर्य उतरायण में रहता हो, तब प्राण तन से निकले वह पुरुष श्रेष्ठ गति को प्राप्त होता है।

-ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

जो अंधकार से जाने वाले होते हैं उसके अंदर ये गुण नहीं होते हैं। इसीलिए हर व्यक्ति अपने लिए भी निश्चित करे कि मुझे किस तरह से अपने अंतिम घड़ी को ले आना है अपने जीवन में, ताकि एक श्रेष्ठ गति को हम प्राप्त कर लें। तो उसके लिए जो लक्षण है ज्ञान-युक्त बुद्धि, कर्मयोगी जीवन जिसमें यज्ञ सेवा की अग्नि जलती हो अर्थात् सेवा भावना भरपूर हो। आत्मा के शुद्धिकरण की सेवा नित्य करता हो। जिसकी बुद्धि की प्रभा सूर्य के समान हो, इतनी बुद्धि तेजस्वी हो। हृदय आकाश में कोई आसक्ति न हो, कोई इच्छा न हो, कोई प्रकार की द्वेष की भावना न हो और भावनाओं का पूर्ण उजाला हो, ये लक्षण हैं श्रेष्ठ गति को प्राप्त होने वाले स्थिति के लिए। इसलिए श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान ने हमें यही प्रेरणा दी कि हमें अपने जीवन में किस तरह इस उजाले को भरना है और उसके लिए जितना योग अभ्यास यानी परमात्मा के साथ जो दिव्य तेजोमय प्रकाश स्वरूप, जगत का नियंता, सर्वज्ञ, अति सूक्ष्म दिव्य ज्योति प्रकाश स्वरूप है, उसके साथ हम जितना बुद्धि का योग लगाते हैं और अनन्य भाव हृदय में भरते हुए उस परमात्मा की स्मृति में बैठते हैं, तब परमात्मा की याद सहज स्वाभाविक आने लगती है। मन अपनी चंचलता को समाप्त कर देता है और तब जीवन में फिर भी अगर कोई ऐसी बात हो कि मन अपनी चंचलता कर रहा हो, तो कोई बात नहीं, भगवान ने ये भी आश्वासन दिया है कि फिर से उसको खींच कर ले आओ और पुन:उसको उस स्वरूप में जोड़ो।

- क्रमश:

विजयलक्षी बनने के... - पेज 2 का शेष...

पाँच बिन्दु:-

1. अपने भीतर छुपे हुए दिव्य-शक्ति में श्रद्धा रख आत्मबल को मज़बूत बनायें।
2. कार्य की कठिनता को कोसने के बजाय, वो सहज कैसे बने, इसके उपाय को क्रियान्वित करें तब आगे बढ़ने की प्रेरणा को बल अपने आप प्राप्त हो जाएगा।
3. आप कार्य को आरंभ कीजिए बस, आपमें छिपी हुई दैवी शक्ति उस कार्य को सहज बनाने की राह बतायेगी।
4. प्रेरणा के लिए मन को भटकता हुआ नहीं रखें। भटकता मन आपको बहानेबाज़ बनायेगा।
5. मन में एक सकारात्मक भाव को सुरक्षित रखें कि मुझे जो भी अनुकूल या प्रतिकूल, जो भी मिलेगा, अंतत: मेरी सफलता और प्रसन्नता के लिए ही होगा।

ठियोग-हि.प्र.। एस.डी.एम. ताशी संदूत को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रीता।

ख़्यालों के आईने में...

लोहा "नरम " होकर औज़ार बन जाता है,
सोना "नरम" होकर जेवर बन जाता है,
मिट्टी "नरम" होकर खेत बन जाती है
आटा "नरम" होता है तो रोटी बन जाती है,
ठीक इसी तरह इंसान भी "नरम" हो जाये तो
लोगों की दिलों में अपनी जगह बना लेता है।

दुनिया की ताकतवर चीज़ है लोहा,
जो सबको काट डालता है,
लोहे से ताकतवर है आग, जो लोहे को पिघला देती है,
आग से ताकतवर है, पानी, जो आग को बुझा देती है,
और पानी से ताकतवर है इंसान जो उसे पी जाता है,
इंसान से भी ताकतवर है मौत, जो उसे खा जाती है,
और मौत से भी ताकतवर है दुआ, जो मौत को भी टाल सकती है।